विपनेट क्षेत्रीय कार्यशाला रिपोर्ट -2012 देहरादून : 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2012, उत्तराखंड राज्य

प्रतिभागी राज्य : उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, जम्मू कशमीर, पंजाब, चंडीगढ़, देहली, हिमाचल प्रदेश

प्रस्तुति : पूजा गोयल -पंजाब (पाथ फाइडिंग सोसायटी)

विज्ञान प्रसार व विपनेट क्लब के रिजनल मीट का तीन दिवसीय कार्यशाला दिनांक 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2012 को देहरादून में 'दून विश्वविद्यालय' के मिटिंग हाल में किया गया। जिसमें उत्तर जोन के 7 राज्यों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का पहला दिन 29-नवम्बर को उद्घाटन सत्र के साथ आरम्भ किया गया। मुख्य अतिथि यूकोस्ट के डॉ. राजेन्द्र डोभाल तथा 'दून विश्वविधालय' के डॉ. जैन शामिल हुए। साथ ही विज्ञान प्रसार के प्रतिनिधि डॉ. राकेश उपाध्याय जी तथा स्पैक्स के डॉ. बृजमोहन शर्मा जी मंचासीन सदस्य थे। डॉ. डोभाल ने साइन्स स्टूडेन्ट को रेशम के कीडे की संज्ञादी उनका कहना था कि साइन्स छात्र कुछ इस तरह का हो जाता है जो अपने आप को कोकून की तरह बंद कर लेता है तथा फिर नौकरी करके उसमें रेशम निकाला जाता है और वह उसी में रह जाता है जिसमें वह सामान्य जन तक नहीं पहुँच पाता। डॉ. शर्मा जी ने इस कार्यशाला का महत्व समझाया कि इससे हमको दुबारा मिलने का मौका मिला ताकि हम विज्ञान को लोगों तक पहुँचाये। यह काम वाकई में कठिन है क्योंकि लोगों को आसानी से हम नहीं समझा सकते। उन्होंने यह भी कहा कि मेरी शादी देर में इसलिये हुई कि मैं साइन्स कम्यूनिकेटर था। डॉ. जैन ने 'दून विश्वविद्यालय' में सभी का स्वागत किया तथा यहां ऐसा कार्यक्रम करवाने पर खुशी जाहिर की।

उसके बाद डॉ. राकेश उपाध्याय जी ने विस्तार से विपनेट क्लब तथा विज्ञान प्रसार के बारे में समझाया जिसमें सारी एक्टीविटि को कैसे करना है। विज्ञान प्रसार क्लबों को क्या-क्या सहायता प्रदान करता है, भारत में कितने विपनेट क्लब बने हैं। साथ ही दोपहर का खाना, दिन में चाय, पकौड़ी, बिस्किट, पेस्ट्री का समावेश था। शामतक चले सत्र में यहीं बाते होती रही शाम का खाना खाने के बाद कल की तैयारी में लग गये।

दूसरा दिन 30 नवम्बर था। शुभारम्भ विज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी बी.के. त्यागी जी द्वारा किया गया जो कल की समस्यायें थीं उनका समाधान बड़ी शान्ती से हुआ। उनकी सुमधुर भाषा में उन्होंने सभी की जिज्ञासा को शान्त किया तथा आगे की रणनीति को बनाने के लिये हर राज्य के प्रतिभागियों को समूह में बिठाया। नई रणनीति के लिए आगे आने वाले वर्षों में हर महीने क्या-क्या कार्य किये जायेंगे इस पर सभी प्रतिभागियों ने चार्ट बनाया फिर सभी लोगों को फील्ड भ्रमण के लिये 'फारेन रिसर्च इंस्टीट्यूट' (एफ.आर.आई.) में ले जाया गया वहां पर सभी ने 750 साल पुराने पेड़ तथा 'गेनोडर्मा' मशरुम के बारे में जानकारी हासिल की। वहां से आने के बाद शाम का सत्र देर रात तक चला। जिसमें रिपोटिंग कैसे की जाये, इंन्टरनेट पर कैसे अपनी बात रखी जाये क्लबों को लोगों तक कैसे पहुँचाया जाये इस पर विज्ञान प्रसार से वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी बी.के. त्यागी जी ने विस्तार से समझाया जिससे सभी लोगों को बहुत आसानी हुई। उसके बाद जो प्रतिभागी अपने चार्ट बनाकर लाये थे उन्होंने उसको बोर्ड पर लगाया। उसमें दर्शाया गया था कि कैसे उन्होंने अपनी गतिविधि की थी। फीडबैक फार्म के बारे में उन्होंने बताया कि इसी के माध्यम से ही विज्ञान प्रसार अपनी गतिविधि को अपनायेगा। उसके बाद विज्ञान प्रसार द्वारा विज्ञान आधारित पुस्तकों का वितरण किया गया जो कि कार्यक्रम रात 8.30 तक चला। उसके बाद रात का खाना खाया तथा सभी ने अपने-अपने समूह में मिलकर रिपोर्ट तैयार की तथा आने वाले कल की कार्यवाही के विषय में चर्चा की।

1 दिसम्बर की शुरुआत नाश्ते से हुई फिर मिटिंग हाल में गये डॉ. शर्मा द्वारा रसोई कसोटी का प्रदर्शन किया गया जिसमें योगेश भट्ठ ने लोगों के सामने प्रस्तुत किया जो सारे लोगों के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा, उसको विस्तार से समझाया गया। फिर डॉ. खनका द्वारा टेलिस्कोप को बनाने की पूरी जानकारी दी गयी तथा डॉ. कार्फी द्वारा भूकम्प के बारे में जानकारी दी गयी कि भूकम्प आने के क्या कारण हैं और उससे कैसे बचाव करें?

परवीन जी द्वारा हाइड्रोफोनिक्स के बारे में जानकारी दी गई कि कैसे जलीय खेती की जा सकती है। पौधों को पानी में कैसे पौषण मिलता है, उस पर चर्चा हुई। उसके बाद समापन सत्र का आरम्भ हुआ जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र बांटे गये साथ ही डॉ. शर्मा जी और विज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी बी.के. त्यागी द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया। साथ ही श्री त्यागी ने कहा कि इस कार्यशाला का आउटपुट मिलना चाहिए। विज्ञान प्रसार इसके लिए धन की व्यवस्था कर रहा है लेकिन उसमें कुछ कमी है, इसमें डाक्यूमेंटेशन तथा ऑडिट रिपोर्ट भी लगानी होगी। उन्होंने सुझाव दिया कि कोई एक संस्था नोडल एजेंसी का कार्य संभाले, तथा यह सम्भव हो सकता है। डॉ. खनका द्वारा भी यूकोस्ट की तरफ से सभी को धन्यवाद दिया गया साथ ही इस बीच सभी प्रतिभागियों को यात्रा भत्ता का भुगतान भी किया गया। इसके बाद एक समूह फोटो सत्र हुआ जो इस कार्यशाला की याद संजोये रखेगा। फिर खाना खाकर सभी लोग विदा हो गये।